॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

नीलरुद्रोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

भगवान् नीलरुद्रकी महिमा और शिव-विष्णुकी एकता

भगवान् नीलकण्ठ! आपको हम अपने दिव्यधामसे नीचे पृथिवीपर अवतीर्ण होते देखते हैं। हम देखते हैं कि आप दुष्टोंका विनाश करते हुए अपने उग्र रुद्ररूपसे मयूरपिच्छके समान गगनको ही मुकुट बनाये पृथिवीपर अवतीर्ण होते हैं और पृथिवीमें प्रतिष्ठित होते हैं; क्योंकि आप ही भूमिके अधीश्वर हैं। (तात्पर्य यह कि नीलकण्ठ भगवान् रुद्र अपने गगनव्यापी स्वरूपसे दिव्यधामसे पृथिवीपर अवतीर्ण होकर दुष्टोंका नाश करके पृथिवीकी रक्षा करते हैं। वे पृथिवीके अधिदेवता हैं। उनकी अष्टविध मूर्तियोंमें पृथिवी भी एक मूर्ति है। इस मन्त्रमें भगवान् शिवकी भूमिमयी मूर्तिका निर्देश है।)

लोगो! इन भगवान् नीलकण्ठको देखो, जिनका वर्ण अत्यन्त लाल है। ये प्राणियोंके जीवनस्वरूप हैं। ये भगवान् रुद्र जलमें निक्षिप्त ओषधियोंमें पधारकर पापोंका विनाश करते हैं। (जलमें ओषधियाँ डालकर उसके द्वारा अभिषेक करनेसे पापनाश होता है।) निश्चय ही तुम्हारे अकल्याणको नष्ट करनेके लिये और तुम्हारे अप्राप्त अभीष्टको प्राप्त करानेके लिये वे (योगक्षेमकारी ओषधियुक्त जलरूप भगवान् रुद्र) तुम्हारे समीप आयें। (इस मन्त्रमें भगवान् रुद्रकी जलमयी मूर्तिका निर्देश है।)

क्रोधस्वरूप भगवान् रुद्र! आपको नमस्कार। मन्यु (क्रोधावेश)-स्वरूप भगवान् भव! आपको नमस्कार। भगवान् नीलकण्ठ! आपकी दोनों भुजाओंको नमस्कार और आपके बाणको भी नमस्कार। कैलासवासिन्! आप पर्वतपर (संसारसे अलग) रहकर सबका मङ्गल करते हैं। भगवन्! जिस बाणको दुष्टोंपर फेंकनेके लिये आपने अपने हाथमें धारण किया है, गिरित्राता! उस बाणको हमारे लिये कल्याणकारी बनाइये। उसके द्वारा पुरुषों (हमारे स्वजनों)-का वध मत कीजिये।

कैलासवासिन्! (अपनी) कल्याणमयी (पवित्र) वाणीके द्वारा हम आपके निर्मल गुणोंका वर्णन करते हैं; क्योंकि यों करनेसे हमारे लिये यह समस्त जगत् दुःखरहित तथा अनुकूल हो जायगा। आपके जो बाण हैं, वे कल्याणमय हैं। आपका धनुष कल्याणकारी होता है। आपके धनुषकी प्रत्यञ्चा भी कल्याणरूपिणी

है। हे मृड! हे मङ्गलस्वरूप! इन सबके द्वारा आप हमें जीवन प्रदान करते हैं। (तात्पर्य यह कि भगवान् रुद्रका विनाशक रूप एवं विनाशके समस्त साधन भगवद्भक्तोंके लिये तथा जगत्के लिये नवजीवनका विधान करनेके लिये हैं और वास्तविक रूपमें कल्याणस्वरूप हैं।)

भगवान् रुद्र! आप पर्वतपर रहकर सबका कल्याण करनेवाले हैं। आपका जो पापहारी अघोर (सौम्य) स्वरूप है, आप अपने उस कल्याणकारी स्वरूपके द्वारा हमें सब ओरसे प्रकाशित करें अर्थात् हमारे सम्मुख सदा सब ओर आपका सौम्य मङ्गलमय स्वरूप ही रहे। ये जो आपकी ताम्रवर्ण, हल्की लाल, भूरी, अत्यन्त लाल तथा और भी सहस्रों रुद्रमूर्तियाँ (किरणें) चारों ओर दिशाओंमें व्याप्त हैं, निश्चय ही हम स्तुतिके लिये उनकी कामना करते हैं। (यहाँ अन्तमें भगवान् रुद्रके सूर्यस्वरूपका निर्देश है) ॥ १ ॥

विलोहित (अधिक रक्तवर्ण) नीलकण्ठ भगवान्! हमने अवतार ग्रहण करते हुए आपको देखा है। आपको (उस अवताररूपमें) या तो गोपोंने देखा है या जल भरनेवाली गोपसुन्दरियोंने देखा है। योगियोंके लिये भी दुर्दर्श आपको (उस श्यामसुन्दरस्वरूपमें) विश्वके समस्त प्राणियोंने देखा है। उस देखे हुए श्रीकृष्णस्वरूपधारी आपको नमस्कार। (यहाँ श्रुति भगवान् रुद्र एवं अवतार-विग्रहोंके एकत्वका निर्देश करती है।) मयूरपिच्छधारी (मयूरमुकुटी)! आपको हम नमस्कार करते हैं। आप ही महान् शक्तिशाली इन्द्र हैं। (देवराज इन्द्र नहीं, जो असुरोंसे पराजित होते हैं। यहाँ गोविन्दसे तात्पर्य है।) अथवा आप अपने भक्तोंके सामने हजारों (असंख्य) नेत्रोंसे सम्पन्न विराट्स्वरूपमें भी प्रकट होते हैं और आपके इस (श्रीकृष्ण) स्वरूपके जो सत्त्वात्मक सहचर (गोपाल, गोपिकाएँ आदि) हैं, उन्हें हम नमस्कार करते हैं।

भगवन्! आपके शक्तिशाली किंतु इस समय प्रयुक्त न होनेवाले आयुधोंको अनेक नमस्कार! दोनों हाथ जोड़कर मैं आपके धनुषको नमस्कार करता हूँ। अपने और शत्रुके—इन दोनों पक्षोंके राजाओंके लिये आप अपने धनुषकी प्रत्यञ्चाको उतार दीजिये अर्थात् आप शान्तस्वरूप धारण कर लें और युद्धकी आशङ्का ही मिटा दें। भगवन्! आपके हाथमें जो बाण हैं, उन्हें लौटा लें—तूणीरमें रख लें अर्थात् अपनी संहार-मूर्तिका त्याग करके अपने परम सौम्य शिवरूपमें मुझे दर्शन दें।

सहस्राक्ष, शिखण्डी, शत बाणोंके युगपत्संधानकर्ता! आप अपने धनुषको चढ़ाकर, अपने बाणोंके मुखोंको तीक्ष्ण करके हमारे कल्याण एवं सुखके लिये उन्हें धनुषपर चढ़ायें। (हमारे शत्रुओंके नष्ट होनेपर) आपका धनुष प्रत्यञ्चारहित हो। क्लेश देनेकी क्रिया छोड़कर बाण तूणीरमें रखे जायँ। आपके बाण, जो पर्वतोंको भी चूर्ण करनेवाले हैं, इस आपके निषङ्ग (तरकश)-में प्रवेश करके कल्याणमय हों। आपके धनुषमें संधान किया हुआ बाण विश्वमें चारों ओरसे हमारी रक्षा करे। इस रक्षणके अनन्तर आप अपने उस बाणको अपने तूणीरमें रख दें। भक्तोंपर अत्यधिक कृपाकी वर्षा करनेवाले! आपके समीप जो अमोघ बाण है और आपके हाथमें जो धनुष है, उनके द्वारा आप चारों ओरसे हमारा परिपालन करें।

उन सर्पों (डसनेवाले जीवों)-को नमस्कार, जो पृथिवीपर रहते हैं। जो आकाशमें रहते हैं और जो स्वर्गमें रहते हैं, उन सर्पों (कष्ट देनेवाली शक्तियों)-को नमस्कार। जो प्रकाशमय लोकोंमें (ग्रहोंमें) रहते हैं तथा जो सूर्यकी किरणोंमें रहते हैं, जो इस जलमें रहनेवाले हैं, उन सब सर्पों (क्लेशदायिका शक्तियों)-को नमस्कार। जो राक्षसोंके बाणके रूपमें हैं, जो वनस्पतियोंमें रहते हैं और जो गड्ढोंमें पड़े हैं, उन सब सर्पोंको नमस्कार। (इस मन्त्रमें सर्वत्र व्यापक भगवान् रुद्रके कालस्वरूपका निर्देश है।)

जो भगवान् शङ्कर अपने भक्तोंके लिये नीलकण्ठ स्वरूप धारण करते हैं अर्थात् भक्तोंके कल्याणके लिये ही जिन्होंने हालाहल पान करके उसे चिह्नरूपमें अपने गलेमें धारण किया है, जो भगवान् अपने निज जनोंके लिये हरितवर्ण श्रीहरि रूप बन

जाते हैं (यहाँ भगवान् शिव एवं भगवान् विष्णुका एकत्व प्रतिपादित है), हे ओषधियो! उन काली पूँछवाले (महिषरूपधारी भगवान् केदारेश्वर)-के लिये शीघ्र अमोघ शक्तिसम्पन्न बनो; क्योंकि इससे तुम उन्हें संतुष्ट कर सकोगी।

वे पिङ्गलवर्ण एवं पिङ्गल कानोंवाले, नीलकण्ठधारी भगवान् शिव वही हैं,जिन सर्वस्वरूप, नीलशिखण्डधारी (सर्वव्यापक) भगवान् विरूपाक्ष भव (शङ्कर)-के द्वारा देवताओंके ही नहीं, अपितु वाणीका प्रयोग करनेवाले—चेतन प्राणिमात्रके पिता ब्रह्माजी मारे गये। हे वीर! सर्वव्यापक स्वरूपसे उन्हें ही प्रत्येक कर्ममें (व्यापक एवं कर्मरूप) देखो। यह उन (भगवान् शङ्कर)-के सम्बन्धमें पूछनेकी इच्छा (शङ्का)-को छोड़ दो, जिसके द्वारा हम इस विश्वको उनसे विभक्त कर देते हैं—उनसे अलग भोग्य मान लेते हैं अर्थात् इस विश्वको उन्हींका रूप मानना चाहिये। जगत्कारण-स्वरूप भगवान् भवको नमस्कार, संहारकर्ता रुद्रको नमस्कार, जगत्का नाश करनेके लिये शत्रुरूप बने हुए प्रभुको नमस्कार, उन नीलशिखण्डधारी (गगनमुकुटी)-को अथवा काले सींगोंवाले (महिषरूप केदारेश्वर नीलरुद्र)-को नमस्कार तथा उन (दक्ष)-की सभा (विवाहमण्डप)-को सुशोभित करनेवाले कुमाररूप प्रभुको नमस्कार।

जिनसे घोड़े उत्पन्न हुए, खच्चर हुए तथा चारों ओर दौड़नेवाले गधे हुए, उन नीलशिखण्डधारी (महिषरूप केदारेश्वर नीलरुद्र)-को नमस्कार। सभामण्डपकी शोभा बढ़ानेवाले उन भगवान्को नमस्कार, नमस्कार॥ ३॥

॥ अथर्ववेदीय नीलरुद्रोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

रोग और मृत्युको तप समझनेसे महान् लाभ

एतद् वै परमं तपो यद् व्याहितस्तप्यते परमꣳ हैव लोकं जयति य एवं वेद एतद् वै परमं तपो यं प्रेतमरण्यꣳहरन्ति परमꣳ हैव लोकं जयति य एवं वेद एतद् वै परमं तपो यं प्रेतमग्नावभ्यादधति परमꣳ हैव लोकं जयति य एवं वेद। (बृहदारण्यक० ५।११।१)

ज्वरादि व्याधियोंसे जो कष्ट होता है, उसको निश्चय ही परम तप समझे। जो ऐसा जानता है, वह परम लोकको ही जीत लेता है। (तपकी भावनाके कारण शारीरिक कष्ट होते हुए भी दुःख नहीं होता और तपका फल प्राप्त होता है।) मृत मनुष्यको जो वनमें जलानेके लिये ले जाते हैं, उसको निश्चय ही परम तप समझे, जो ऐसा जानता है, वह परम लोकको जीत लेता है। मृतक मनुष्यको जो अग्निमें जलाते हैं वह भी निश्चय ही परम तप है, जो ऐसा जानता है, वह परम लोकको ही जीत लेता है। (मृत्युमें तपकी भावनासे मरण-कष्ट नहीं होता और अन्तमें मनमें तपरूप परमात्माकी स्मृति रहनेसे दिव्य धाम या परमात्माकी प्राप्ति होती है।)